वेदों में पर्यावरण

श्रीधर स. व्यास
निदेशक
ब्रह्मचारीवाडी संस्कृत संस्थान

१. स्थापना

संसार आज चाहे कितनी भी प्रगति का प्रस्ताव रख दें, यह सत्य हैं की मानवीय समस्याओं का समाधान हमें वेदों में ही दिखाई देता है। मानव जीवन के उत्कर्ष के लिए जो कुछ भी उपयुक्त है वेसी सभी चीजों की प्राप्ति वेदों में पायी जाती हैं। वेदों में नि:श्रेयस के साधनों के साथ साथ जीवन जीने की कला भी दिखाई देती है। वेदों का विषय वैविध्य सुविदित होने से सीधा वेदों में पर्यावरण की और गति करते हें।

आज विश्व के सभी समस्याए जानना चाहे तो वहां शुरुआत की प्रथम पांच समस्याओं में पर्यावरण की समस्या दिखाई देती है। भौतिकवाद की स्थापना का विकार आज विश्व के लिए भारी चर्चा का विषय बन गया है। मनुष्य ने नदीयाँ, वायु, अंतरीक्ष सब कुछ भ्रष्ट कर दीया है। एसीस्थिति में हम गर्व से कह सकते है की भारत ने वेदकाल से ही इस बात की जागृति रखी है। वेदों मै पर्यावरण सम्बंधित इतने विषय पाए जाते है –

- पर्यावरण रक्षण
- वातावरण संतुलन
- वर्षा जलागमन
- जल परिवर्तन

यूनेस्को द्वारा स्थापित मार्ग दर्शिका को अनुसरते भारत ने जब १९८६ में पर्यावरण रक्षा नियम (१) स्थापित किया तब जल, वनस्पति, वायु, भूमि आदि संकलित तत्त्वों को पर्यावरण की सूची में समविष्ट किया है। अत: इन इन व्यापारों को हम पर्यावरण अंतर्गत जान सकते है , जिनकी चर्चा वेदों मै पायी जाती है।

२. अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त

अथर्ववेद में (२) प्राप्त पृथ्वी सूक्त की प्रसिद्ध उक्ति
“ माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या: ।।“
पर्यावरण रक्षा निमित्त बहुत कुछ कहती है। पृथ्वी को माता मानने से उसकी रक्षा करना पुत्र का प्रथम धर्म बनाता है। यह सोच धरे रखने से प्राथमिक कक्षा की जागृति स्वयं ही आ जायेगी। जिससे पृथ्वी एवं पार्थिव तत्वों जो पर्यावरण सम्बंधित है उअनकी रक्षा के संस्कार टिक पायेंगे।

३. देवता सृष्टि एवं पर्यावरण

वैदिक देवता सृष्टि को अगर ध्यान से समजे तो वहा जो भी अनेक देवता पायें जाते है उनमेसे से अधिकतर पर्यावरण का ही प्रतिनिधित्व करते है। अग्नि, सोम, इंद्र, रूद्र, मरुत, वायु, पर्जन्य, वरुण, उषा, अश्विन आदि देवगण पर्यावरण से ही जुड़े है।यहाँ ध्यातव्य है की जहां इन देवताओं का द्यु स्थानीय, अंतरीक्षस्थानीय एवं पृथ्वीस्थानीय वर्गीकरण किया है, आश्चर्य है की ऋषीयों की दिव्य दृष्टी पृथ्वी को छोड़कर अंतरीक्ष में भी यात्रा कर चुकी थी।

४. ऋग्वेद में पर्यावरण

ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के ४९ वें सूक्त में जल का वर्णन ४ मन्त्रों में प्राप्त होता है। यहाँ ऋषी कहते है - समुद्र जिन में बड़ा है ऐसे जल सब को शुद्ध करते है। ये सदा गतिशील है। अंतरीक्ष मै गति करते है। अंतरीक्ष में उत्पन्न जल नदी में जाते है और खोदकर निकाले जानेवाले जल सागर की और गति करते है। यहाँ वरुण को जल का राजा (३) यहीं जल को अग्नि में प्रविष्ट होनेवाला भी कहा है। (४) जो की आगे चलकर जल से उत्पन्न होनेवाली विद्युत् रूप अग्नि का बोधक है।

यहीं दसवे मंडल में ९७ वे सूक्त में औशाधिसूक्त पाया गया है। यहाँ १७ वें मन्त्र में स्वर्गलोक से पृथ्वी पर अवतरण करती हुई औषधि ने प्रतिज्ञा की थीकी जिस पुरुष को उसके जीवनकी अवधी में हम स्वीकार करेंगे वह कभी भी विनष्ट नहीं होगा। (५) ध्यान रहें की औषधियां भी पर्यावरण का अभिन्न अंग मानी गयी है। ऋग्वेद के दशम मंडल के १४६ वें सूक्त में विशाल वन सम्बंधित विचार पायें गएँ है। जहां वन को किसी को भी न मारनेवाला (६) कहा है। पशुओ की माता के रूप में विशाल वन को देखा है। साथ ही ऋषी कहते है, अगर हिंसक पशु ण होते तो मनुष्य वन्य पुष्प फलादि का आस्वादन भी करपाते। स्वयं स्पस्ट है की वैदिक काल में पुष्पफलादि से समृद्ध होनेवाले वन उन दिनों मनुष्यों से बचे थे। आज मानव ने इन गहन वनों को मान लो नष्ट ही कर दीया। जिससे पर्यावरण आज असंतुलित हो गया है। ऋग्वेद के इन मन्त्रों का सार अगर देखें तो मित्र, वरुण, इंद्र, मरुत, आदित्य आदि देवतागण पर्यावरण के रक्षण एवं संचालना के लिए निमित्त बनते है।

५. अथर्ववेद में पर्यावरण

अथर्ववेद में प्रथम काण्ड में पर्जन्य अर्थात् बादल, पृथ्वी, जल के देवता का वर्णन प्राप्त होता है। यहाँ जल का औषधि के रूप में वर्णन पाया जाता है।(७) यही ३२ वे सूक्त में पृथ्वी और आकाश सम्बन्धी चर्चा भी पायी जाती हैं। अध्याय १४ में रोहिणी,सहदेवी, अपामार्ग, मधुला, ब्रह्मजाया आदि औषधियो का सुन्दर वर्णन मिलता है। उसी तरह पलाश (८) तथा आठवे काण्ड में ग्वारपाठा, पीली सरसों, तुलसी आदि का भी वर्णन हैं। बारहवें काण्ड में पृथ्वी की एक सुन्दर स्तुति है। जिसका यह मन्त्र दृष्टव्य है –

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्मान्न कृष्टव्य: सम्बभूवु: ।
यस्यामिदम् जिन्वति प्राणादेजत सा नो भूमि: पूर्वपेये दधातु ।।(९)

इसी सूक्त में पृथ्वी को विश्वम्भरा, वसुधानी, हिरण्यवक्षा, जगतो निवेशनी कहा है। पृथ्वी के लिए संबोधन वाचक ये शब्द उसकी पर्यावरण सम्पन्नता बतलाते है। दसवें काण्ड में वृक्षों के रक्षण का महत्त्व बतलाते कहते है – अविर्नाम देवतर्तेनास्तेपरिवृता। तस्या रूपेणेमे वृक्षा: हरिता हरितस्रज: ।। (अ.१०-८-३९)(१०)

६. यजुर्वेदमे पर्यावरण

यजुर्वेद के चौथे अध्याय में जल की महिमा बतलाकर जल को अमृतस्वरूप कहा है। वहीं सातवे अध्याय में जल बरसानेवाले मरूदगणों की बात है। नववें अध्याय में पृथ्वी की उपासना है।

७. पर्यावरण की रक्षा

उन दिनों प्रदूषण तो था नहीं, फिर भी पर्यावरण की रक्षा हेतु पाप से अर्थात् कुबुद्धि से बचने की बात है। यज्ञीय संस्था दृढ़ होने के कारण पर्यावरण संतुलित रहता था। यजुर्वेद कहता है –

आयुर्जज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम् ।
अर्थात् यज्ञ से आयु:, प्राण:, नेत्रज्योति बढ़ें ।

शतपथ ब्राह्मण में प्रदूषण शांत करने के लिए तीन प्रयो विद्यमान है । वहा प्राप्त असुर की आख्यायिका – ऋषभप्रयोग, जायाप्रयोग और यज्ञप्रयोग को गर्भितार्थ से समजने से वैद्य – वनस्पति एवं यज्ञों से पर्यावरण संतुलित करनेकी ही बात है । (१०) आज वैज्ञानिकों ने पर्यावरण रक्षार्थ जो मार्गदर्शिका दी है उनमें अधिकतर विषय वैदिक परम्परा का अनुसरण करने से सिद्ध हो जाते है । जैसे की वे कहते है जल बचाइए – तो वेद कहते है – 'शिवा आप: सन्तु' । वे कहते है अन्न बचाइए – तो वेद कहते है – अन्नं ण निन्द्यात । उस मार्गदर्शिका में जल्दी जग जानेका भी सूचन है ताकि सूर्य की किरणों का शिकातम उपयोग हो, विद्युत् ऊर्जा का बचाव हो । वेद तो सूर्योदय पूर्व जग जाने की बात कहते ही है । अत: वैदिक परम्पराओं एवं आज्ञाओं का अनुसरण करने से अवश्य ही अवश्य पर्यावरण रक्षा हो सकेगी ।

८. उपसंहार

अमृतस्य पुत्रा: एसा संबोधन जिसके लिए किया गया हो वेसे मनुष्य को डरकर जीनेकी आवश्यकता नहीं । हाँ जागरूकता आवश्यक है । वैसे भी सत्य कहा है -कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।

पादटीप

(१) ENVIIORMENT PROTECTION ACT 1986.
(२) काण्ड अध्याय
(३) यासां राजा वरुणो ... मामावान्तु । ऋग्वेद ७-४९-८
(४) तत्रैव
(५) अवपतन्ती रवदन्विव ओषधस्परि यम् । जीवमश्नावामाहे न स रिष्यति पुरुष: ।। ऋ. १०-९७-१७
(६) न वा अरण्यानिर्हंत्यन्य ।। ऋ १०-१४६-४
(७) अथर्ववेद काण्ड १, सूक्त ५.
(८) अथर्ववेद ६-१५.
(९) अथर्ववेद काण्ड १२ के इस प्रथम सूक्त में ६३ मन्त्र हैं । उनमें से यह मन्त्र तीसरा हैं । अर्थ है – ये हो भूमि सागर, नदियों, ज़रनो से समृद्ध है, सुशोभित है , जहाँ कृषि की जाती है, अन्न उत्पन्न होता है, जहाँ किसान खेती करते है, वह हमारे लिए गायें और अन्न धारण करें ।
(१०)BOTTONY विद्वान अवि का अर्थ CHLOROPHIL करते है, जो पत्तों मे हरापन लाता है ।
(११)शतपथ ब्राह्मण १-१-४-१

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शर्मा, गंगा सहाय ऋग्वेद, (२०१६). संस्कृत साहित्य प्रकाशन, ISBN:9789350652237
2. शर्मा, गंगा सहाय अथर्ववेद, (२०१६). संस्कृत साहित्य प्रकाशन, ISBN:8187164972
3. शतपथ ब्राह्मण
4. शर्मा, गंगा सहाय (२०१६). यजुर्वेद संस्कृत साहित्य प्रकाशन, ISBN:8179870960